

नमो नमो निम्मलदंसणस्स  
पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

# On Line – आगममंजूषा

[२५] आउरपच्यकखाणं

\* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता \*

मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

## ॥ किञ्चित् प्रास्ताविकम् ॥

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत् २४६८, विक्रम संवत्-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री [आनंदसागरसूरिजी](#) म.सा.ने किया था। आज तक उन्ही के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूँढते आगे बढ़ रहे हैं।

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012, विक्रम संवत्-२०६८, वीर संवत्-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “**OnLine-आगममंजूषा**” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं।

**\* मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किञ्चित् भिन्नता का स्वीकार \***

- [१] आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है।  
[२] जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है।  
[३] जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है।

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है।

[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है।

**-मुनि दीपरत्नसागर**

: Address:-

**Mnui Deepratnasagar,**  
**MangalDeep society, Opp.DholeswarMandir,**  
**POST:- THANGADH Dist.surendranagar.**  
**Mobile:-9825967397** [jainmunideepratnasagar@gmail.com](mailto:jainmunideepratnasagar@gmail.com)

मुनि दीपरत्नसागर



**31/01/11-24 → श्रीआतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णकम्-देसिकदेसविरओ सम्महिटी मरिज्ज जो जीवो । तं होइ बालपंडियमरणं जिणसासणे भणियं ॥ १ ॥ ६४ ॥ पंच य अणुब्रयाइं सत्त उ**  
**सिक्खा उ देसजइधम्मो । सब्बेण व देसेण व तेण जुओ होइ देसजई ॥ २ ॥ पाणिवहमुसावाए अदत्तपरदारनियमणेहिं च । अपरिमिइच्छाओऽवि य अणुब्रयाइं विरमणाइं ॥ ३ ॥ जं च**  
**दिसावेरमणं अणत्थदंडाउ जं च वेरमणं । देसावगासियंपिय गुणब्रयाइं भवे ताइं ॥ ४ ॥ भोगाणं परिसंखा सामाइयअतिहिसंविभागो य । पोसहविही य सब्बो चउरो सिक्खाउ वुत्ताओ**  
**॥ ५ ॥ आसुक्कारे मरणे अच्छिन्नाए य जीवियासाए । नाएहि वा अमुक्को पच्छिमसंलेहणमकिच्चा ॥ ६ ॥ आलोइय निस्सहो सघरे चेवारुहित्तु संथारं । जइ मरइ देसविरओ तं वुत्तं बालपं-**  
**डिययं ॥ ७ ॥ जो भत्तपरिन्नाए उवक्कमो वित्थरेण निहिट्ठो । सो चेव बालपंडियमरणे नेओ जहाजुगं ॥ ८ ॥ वेमाणिएसु कप्पोवगेसु नियमेण तस्स उववाओ । नियमा सिज्झइ**  
**उक्कोसएण सो सत्तमंमि भवे ॥ ९ ॥ इय बालपंडियं होइ मरणमरिहंतसासणे दिट्ठं । इत्तो पंडियपंडियमरणं वुच्छं समासेणं ॥ १० ॥ इच्छामि णं भंते ! उत्तमट्ठं पडिक्कमामि अईयं पडि-**  
**क्कमामि अणागयं पडिक्कमामि पच्चुप्पन्नं पडि० कयं पडि० कारियं पडि० अणुमोइयं पडि० मिच्छत्तं पडि० असंजमं पडि० कसायं पडि० पावप्पओगं पडिक्कमामि, मिच्छादंसणप-**  
**रिणामेसु वा इहलोगेसु वा परलोगेसु वा सच्चित्तेसु वा अच्चित्तेसु वा पंचसु इंदियत्थेसु वा, अन्नाणंज्ञाणे अणायारं० कुंदसणं० कोहं० माणं० मायं० लोभं० रागं० दोसं० मोहं० १० इच्छं०**  
**मिच्छं० मुच्छं० संकं० कंखं० गेहिं० आसं० तण्हं० छुहं० पंथं० २० पंथाणं० निदं० नियाणं० नेहं० कामं० कलुसं० कलहं० जुज्झं० निजुज्झं० संगं० ३० संगहं० ववहारं० कयवि-**  
**क्कयं० अणत्थदंडं० आभोगं० अणाभोगं० अणाइहं० वेरं० वियक्कं० हिंसं० ४० हासं० पहासं० पओसं० फरुसं० भयं० रूवं० अप्पपसंसं० परनिदं० परगरिहं० परिग्गहं० ५० परप-**  
**रिवायं० परदूसणं० आरंभं० संरंभं० पावाणुमोअणं० अहिगरणं० असमाहिमरणं० कम्मोदयपच्चयं० इड्ढिगारवं० रसगारवं० ६० सायागारवं० अवेरमणं० अमुत्तिमरणंज्ञाणं, पसुत्तस्स**  
**वा पडिबुद्धस्स वा जो मे कोई देवसिओ राइओ उत्तमट्ठे अइक्कमो वइक्कमो अइयारो अणायारो तस्स मिच्छामिदुक्कडं । १ । एस करेमि पणामं जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।**  
**सेसाणंपि जिणाणं सगणहराणं च सब्बेसिं ॥ ११ ॥ सब्बं पाणारंभं पच्चक्खामित्ति अलियवयणं च । सब्बमदिन्नादाणं मेहुण्णपरिग्गहं चेव ॥ २ ॥ सम्मं मे सब्बभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ।**  
**आसाउ ओसिरित्ताणं, समाहिमणुपालए ॥ ३ ॥ सब्बं चाहारविहिं सन्नाओ गारवे कसाए य । सब्बं चेव ममत्तं चएमि सब्बं खमावेमि ॥ ४ ॥ हुज्जा इमंमि समए उवक्कमो जीवियस्स जइ**  
**मज्झ । एयं पच्चक्खाणं विउला आराहणा होउ ॥ ५ ॥ सब्बदुक्खपहीणाणं, सिद्धाणं अरहो नमो । सहहे जिणपन्नत्तं, पच्चक्खामि य पावगं ॥ ६ ॥ नमुत्थु धुयपावाणं, सिद्धाणं च महेसिणं ।**  
**संथारं पडिवज्जामि, जहा केवलिदेसियं ॥ ७ ॥ जं किंचिबि दुच्चरियं तं सब्बं वोसिरामि तिविहेणं । सामाइयं च तिविहं करेमि सब्बं निरागारं ॥ ८ ॥ बज्झं अग्ग्भितरं उवहिं, सरीराइ सभो-**  
**यणं । मणसावयकाएहिं, सब्बभावेण वोसिरे ॥ ९ ॥ सब्बं पाणारंभं तं सब्बं ॥ २० ॥ सम्मं मे सब्बभूएसु ॥ १ ॥ रागं बंधं पओसं च, हरिसं दीणभावयं । उस्सुगत्तं भयं सोगं, रइं अरइं च**  
**९०९ आतुरप्रत्याख्यानं, २०११-१-२१**

बोसिरे ॥ २ ॥ ममत्तं परिक्रामि, निम्नत्तं उवट्टिओ । आलंबणं च मे आया, अवसेसं च वोसिरे ॥ ३ ॥ आया हु महं नाणे आया मे दंसणे चरित्ते य । आया पच्चक्खाणे आया मे संजमे जोगे ॥ ४ ॥ एगो वच्चह जीवो, एगो चेषुववज्जई । एगस्स चेष मरणं, एगो सिज्झइ नीरओ ॥ ५ ॥ एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ । सेसा मे बाहिरा भावा, सब्बे संजोगलक्खणा ॥ ६ ॥ संजोगमूला जीवेणं, पत्ता दुक्खपरंपरा । तम्हा संजोगसंबंधं, सब्बभावेण (प्र० सब्बं तिविहेण) वोसिरे ॥ ७ ॥ मूलगुणे उत्तरगुणे जे मे नाराहिया पमाएणं । तमहं सब्बं निंदे पडिक्कमे आगमिस्साणं ॥ ८ ॥ सत्त मए अट्ट मए सन्ना चत्तारि गारवे तिन्नि । आसायण तेत्तीसं रागं दोसं च गरिहामि ॥ ९ ॥ अस्संजममञ्जारणं मिच्छत्तं सब्बमेव य ममत्तं । जीवेषु अजीवेषु य, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३० ॥ निंदामि निंदणिजं गरिहामि य जं च मे गरहणिजं । आलोएमि य सब्बं सन्निभतरबाहिरं उवहिं ॥ १ ॥ जह बालो जंपंतो कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ । तं तह आलोइज्जा मायामोसं पमुत्तूणं (प्र० मायामयविप्पमुक्को अ ) ॥ २ ॥ नाणंमि दंसणंमि य तवे चरित्ते य चउसुवि अकंपो । धीरो आगमकुसलो अपरिस्सावी रहस्साणं ॥ ३ ॥ रागेण व दोसेण व जं मे अकयन्नुया पमाएणं । जो मे किंचिवि भणिओ तमहं तिविहेण खामेमि ॥ ४ ॥ तिविहं भणंति मरणं बालाणं बालपंडियाणं च । तइयं पंडितमरणं जं केवलिणो अणुमरंति ॥ ५ ॥ जे पुण अट्टमईया पयलियसन्ना य बंक्कमावा य । असमाहिणा मरंति न हु ते आराहगा भणिया ॥ ६ ॥ मरणे विराहिए देवदुग्गई दुल्लहा य किर बोही । संसारो य अणंतो होइ पुणो आगमिस्साणं ॥ ७ ॥ का देवदुग्गई का अबोहि केणेव वुज्झई मरणं । केण अणंतमपारं संसारं हिंडई जीवो ॥ ८ ॥ कंदप्प देवकिम्बिस अभिओगा आसुरी य संमोहा । ता देवदुग्गईओ मरणंमि विराहिए हुंति ॥ ९ ॥ मिच्छइंसणरत्ता सनियाणा कण्हलेसमोगाढा । इय जे मरंति जीवा तेसिं दुल्लहा भवे बोही ॥ ४० ॥ सम्मइंसणरत्ता अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा । इय जे मरंति जीवा तेसिं सुल्लहा भवे बोही ॥ १ ॥ जे पुण गुरुपडिणीया बहुमोहा ससबला कुसीला य । असमाहिणा मरंति ते हुंति अणंतसंसारी ॥ २ ॥ जिणवयणे अणुरत्ता गुरुवयणं जे करंति भावेणं । असबल असंकिलिट्ठा ते हुंति परित्तसंसारी ॥ ३ ॥ बालमरणाणि बहुसो बहुयाणि अकामगाणि मरणाणि । मरिहंति ते वराया जे जिणवयणं न याणंति ॥ ४ ॥ सत्थग्गहणं विसभक्खणं च जलणं च जलपवेसो य । अणयारभंडसेवी जम्मणमरणाणुबंधीणि ॥ ५ ॥ उड्ढमहे तिरियंमिवि मयाणि जीवेण बालमरणाणि । दंसणनाणसहगओ पंडिअमरणं अणुमरिस्सं ॥ ६ ॥ उबेयणयं जाई मरणं नरएसु वेयणाओ य । एयाणि संभरंतो पंडियमरणं मरसु इण्हि ॥ ७ ॥ जइ उप्पज्जइ दुक्खं तो दट्टओ सहावओ नवरं । किं किं मए न पत्तं संसारे संसरंतेणं ? ॥ ८ ॥ संसारचक्कवालंमि सब्बेऽविय पुग्गला मए बहुसो । आहारिया य परिणामिया य नाहं गओ तित्ति ॥ ९ ॥ तणकट्टेहिव अग्गी लवणजलो वा नईसहस्सेहिं । न इमो जीवो सक्को तिप्पेउं कामभोगेहिं ॥ ५० ॥ आहारनिमित्तेणं मच्छा गच्छंति सत्तमिं पुढवीं । सच्चित्तो आहारो न खमो मणसावि पत्थेउं ॥ १ ॥ पुब्बिं कयपरिकम्मो अनियाणो ऊहिऊण मइबुद्धी । पच्छा मलियकसाओ सज्जो मरणं पडिच्छामि ॥ २ ॥ अक्कडेऽचिरभाविय ते पुरिसा मरणदेसकालम्मि । पुब्बकयकम्मपरिभावणाए पच्छा परिवडंति ॥ ३ ॥ तम्हा चंदगविज्झं सकारणं उज्जुएण पुरिसेणं । जीवो अविरहियगुणो कायवो मुक्खमग्गंमि ॥ ४ ॥ बाहिरजोगविरहिओ अन्निभतरणजोगमल्लीणो । जह तंमि देसकाले अमूढसन्नो चयइ देहं ॥ ५ ॥ हंतूण रागदोसं छित्तूण य अट्टकम्मसंघायं । जम्मणमरणडरहट्टं भित्तूण भवा विमुच्चिहिति ॥ ६ ॥ एयं सब्बवएसं जिणदिट्टं सहहामि तिविहेणं । तसथावरखेमकरं पारं निज्जाणमग्गस्स ॥ ७ ॥ न हु तम्मि देसकाले सक्को बारसविहो सुयक्खंधो । सब्बो अणुच्चित्तेउं धणियंपि समत्थचित्तेणं ॥ ८ ॥ एगंमिवि जम्मि पए संवेगं वीयरायमग्गंमि । गच्छइ नरो अभिक्खं तं मरणं तेण मरियच्चं । ९ । ता एगंपि सिल्लेगं जो पुरिसो मरणदेसकालम्मि । आराहणोवउत्तो चित्तंतो राहगो होइ ॥ ६० ॥ आराहणोवउत्तो कालं काऊण सुविहिओ सम्मं । उक्कोसं तिन्नि भवे गंतूणं लहइ निज्जाणं ॥ १ ॥ समणोत्ति अहं पढमं बीयं सब्बत्थ संजओमित्ति । सब्बं च वोसिरामी एयं भणियं समासेणं ॥ २ ॥ लद्धं अलद्धपुब्बं जिणवयण सुभासियं अमयभूयं । गहिओ सग्गइमग्गो नाहं मरणस्स बीहेमि ॥ ३ ॥ धीरेणवि मरियच्चं काउरिसेणवि अवस्स मरियच्चं । दुण्हंपि हु मरियच्चे वरं खु धीरत्तणे मरिउं ॥ ४ ॥ सीलेणवि मरियच्चं निस्सीलेणवि अवस्स मरियच्चं । दुण्हंपि हु मरियच्चे वरं खु सीलत्तणे मरिउं ॥ ५ ॥ नाणस्स दंसणस्स य सम्मत्तस्स य चरित्तजुत्तस्स । जो काही उवओगं संसारा सो विमुच्चिहिइ ॥ ६ ॥ चिरउसियबंधयारी पप्फोडेऊण सेसयं कम्मं । अणुपुब्बीइ विसुद्धो गच्छइ सिद्धिं धुयकिलेसो ॥ ७ ॥ निक्कसायस्स दंतस्स, सूरस्स ववसाइणो । संसारपरिभीयस्स, पच्चक्खाणं सुहं भवे ॥ ८ ॥ एयं पच्चक्खाणं जो काही मरणदेसकालम्मि । धीरो अमूढसन्नो सो गच्छइ सासयं ठाणं ॥ ९ ॥ धीरो जरमरणविऊ वीरो विज्जाणनाणसंपन्नो । ल्लेगस्सुज्जोयगरो दिसउ खयं सब्बदुक्खाणं ॥ ७० ॥ १, १३३ ॥ इति आतुरप्रत्याख्यानम् २ । ३११११ २६ → श्रीमहाप्रत्याख्यानप्रकीर्णकम्-एस करेमि पणामं तित्थयराणं अणुत्तरगईणं । सब्बेसिं च जिणाणं सिद्धाणं संजयाणं च ॥ १ ॥ १३४ ॥ सब्बदुक्खप्पही